Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 8 | AUGUST 2025

प्रेमचन्द के उपन्यासों में बाल-मनोविज्ञान का अध्ययन

डॉ. प्रीति [1]

[1] **नैनीताल, उत्तराखण्ड.**

ABSTRACT:

''हिन्दी उपन्यासों में मनोविज्ञान सम्बन्धी तत्व सबसे पहले प्रेमचन्द के उपन्यासों में ही मिलता हैं, प्रेमचन्द शैलीकार या साहित्यकार नहीं थे और न ही वह भाषा लिखते थे बल्कि अपनी वेदना लिखते थे। उन्होंने बालक के मन को समझने वाले विज्ञान अर्थात बाल-मनोविज्ञान पर आधारित अनेक उपन्यासों की रचना की थी। इन उपन्यासों में कहीं तो बालक को कल के समाज का सर्जक दिखाया गया है तथा कही बच्चे अपनी कल्पना शक्ति से अपनी जिज्ञासा को कैसे शांत करते है इसका वर्णन है, प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में बाल-मनोविज्ञान के इसी तथ्य को खोजने का प्रयास किया हैं।''

KEYWORDS:

मनोविज्ञान, बालक, उपन्यास, जिज्ञासा, बचपन

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
24th August 2025	26th August 2025

प्रस्तावना:-

प्रेमचन्द हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यासकार हैं, उनका जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी में हुआ था उन्हें अपने जीवन-काल में ही उपन्यास सम्राट की पदवी मिल गयी थी। प्रेमचन्द मुख्य रूप से कहानी और उपन्यास के लिए प्रसिद्ध रहे है, उन्होंने हिन्दी के पाठकों की अभिरूचि को तिलिस्मी उपन्यासों की गर्त से निकालकर शुद्ध साहित्यिक नींव पर स्थिर किया उनकी कला, उनका आर्दशवाद, उनकी कल्पना, सौन्दर्यानुभूति और उनके चरित्र आदि मध्यवर्ग की जनता का सच्चा प्रतिनिधित्व करते है, उनके उपन्यासों में बाल-मनोविज्ञान की स्पष्ट झलक मिलती है, उन्होंने अनेकों उपन्यासों में बाल-मन को टटोलने का प्रयास किया है, उनका मानना यह रहा है कि बच्चे देश का भविष्य होते है इसलिए उनका विशेष ध्यान रखना चाहिए बच्चों के समुचित विकास पर ही समाज का उज्ज्वल भविष्य निर्भर करता है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में न सिर्फ बालकों के प्रति अपने सोच बल्कि बालकों की अपनी सोच को दर्शाने का उत्कृष्ट कार्य किया है, उन्होंने बच्चों के प्रति अपने विचारों को प्रकट करते हुए लिखा है- ''बालक को प्रधानतः ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वह जीवन में अपनी रक्षा आप कर सकें। बालकों में इतना विवेक होना चाहिए कि वे हर काम के गुण-दोष को भीतर से देखे''[1] प्रेमचन्द बच्चों को अनुशासित एवं सयंमित देखना चाहते थें उन्होंने बाल-मनोविज्ञान को समझने के लिए कई उपन्यासों की रचना की थी, उनके द्वारा रचित उपन्यास 'वरदान' में बाल-मनोविज्ञान के तथ्य स्वतः ही उभर कर सामने आते है, इस उपन्यास में प्रताप नामक बालक जिज्ञासु प्रवृति का होने के साथ ही अत्यन्त होशियार भी है जो बड़ों की कहीं हर बात समझता है, इसी उपन्यास के एक और पात्र मुंशी जी के कहे हुए गलत उतर का प्रताप निर्भीकता पूर्ण खंडन करता है।[2] 'सेवासदन' नामक उपन्यास में बाल मनोवैज्ञानिक तथ्य बिखरे पड़े है जो कि प्रेमचन्द के बाल-मनोवैज्ञानिक अध्ययन की पुष्टि करते है, सेवासदन का सदन माता-पिता के अतिश्य लाड-प्यार से बाल्याकाल में ही ढीट, हटी बन जाता है, तथा अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए दूसरों की किसी भी चीज को उठाने में भी संकुचाता नहीं है, ऐसा इसलिए क्योंकि सदन के परिवार में उसे ठीक ढंग से पालन-पोषण तथा संस्कार नहीं मिलते।[3] 'प्रेमाश्रम' नामक उपन्यास में प्रेमचन्द ने तेजशंकर और पदमशंकर ऐसे दो दुर्भाग्यशाली बच्चों को दिखाया गया है जो माता-पिता का उचित संरक्षण न मिल पाने के कारण उन बच्चों की अबाध्य कल्पना सुविचारों की और उन्मुख न होकर मिथ्या विश्वासों की ओर बढ़ जाती है, परिणामस्वरूप वे चालीस दिन तक भैरव मन्त्र सिद्ध करने के भ्रम में सदा के लिए यह संसार त्याग देते है।[4] 'कायाकल्प' की नायिका मनोरमा तेरह वर्ष की है, उसे चक्रधर नामक शिक्षक पढ़ाने के लिए आते है तथा उसकी सभी शंकाओं का समाधान करते है, सभी बच्चों का मन अपनी शंकाओं का समाधान चाहता हैं, इसी कारण मनोरमा को चक्रधर द्वारा किया गया समाधान अपने मनोनुकूल लगने लगता है तो उसका स्नेह अपने शिक्षक की ओर बढ़ने लगता है।[5] 'कर्मभूमि' उपन्यास का नायक अमरकान्त का बचपन पिता तथा विमाता के ही नियन्त्रण में बीता उसे इन दोनों से ही प्रेम नहीं मिला तथा प्रेम के अभाव में वह ढीठ बन जाता है और बड़ा होने पर भी वह जीवन भर अपनी पत्नी तथा पिता से ठीक प्रकार से सामंजस्य नहीं रख पाता स्नेह के इस अभाव के कारण उसका व्यक्तित्व कुण्ठित हो जाता है तथा वह ऐसे हृदय की ओर दौड़ता है जहाँ उसे प्यार मिले परिणामस्वरूप वह अन्ततः सकीना की ओर आकर्षित हो उससे अवैध संबंध बना लेता है।[6] इस प्रकार उपरोक्त वर्णित सभी उपन्यासों में प्रेमचन्द जी ने बच्चों के मन के विज्ञान को पाठकों के समक्ष उजागर कर उसके समाधान खोजने का भरसक प्रयत्न किया है।

निष्कर्ष:-

प्रेमचन्द महान् उपन्यासकार रहे है उन्होंने अपने बाल मनोवैज्ञानिक उपन्यासों द्वारा यह दर्शाने का प्रयास किया है कि एक बालमन में सकरात्मक और नकरात्मक दोनों ही विचार समाहित रहते है, बाल्याकाल में ही यदि बच्चों को अच्छे संस्कार न मिल पाए तो वह अपनी राह से भटक जाते है और अनैतिक कार्यों में सदा के लिए लिप्त हो जाते है, ऐसे में प्रेमचंद ने अपने बाल-मनोविज्ञान पर आधारित उपन्यासों के माध्यम से समाज को सार्थक संदेश दिया है।

REFERENCES

1. प्रेमचन्द स्मृति, हंस प्रकाशन 1959, बाह्य कवर, से।
2. वरदान, प्रेमचन्द छठा संस्करण, पृ. 14
3. सेवासदन, पे्रमचन्द, पृ. 123
4. प्रेमाश्रम, प्रेमचन्द, पृ. 404

5. कायाकल्प, प्रेमचन्द, पृ. 13

6. कर्मभूमि, प्रेमचन्द, पृ. 10